1. संधि — 5
   (क) पूर्वरूप, पररूप, एवं प्रकृतिभाव।
   (ख) व्यंजन संधि– श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वार।
   (ग) विसर्ग संधि– सत्व, उत्व, रुत्व, लोप।
2. शब्दरूप — 3
   (क) स्वरान्त–गो, द्यौ, नौ, अक्षि।
   (ख) व्यंजनान्त–पुंस्, पथिन्, गिर्, अहन्, पयस्।
   (ग) सर्वनाम– अदस्, ईदृश्, कतिपय, उभ, कीदृश्।
   (घ) संख्यावाची शब्द–
   (क) क्रमसंख्यावाची शब्द– प्रथम, द्वितीय आदि।
   (ख) पचास से सौ तक।
3. धातुरूप — 3
   (क) भ्वादिगण– दा (यच्छ), अर्च्, व्रज्, तप्, शुच्, ह्व, नी, भज्, यज्।
   (ख) अदादिगण–हन्, पा (रक्षणे), दुह्
   (ग) जुहोत्यादिगण– दा (दाने)
   (घ) दिवादिगण– त्रस्, नृत्, नश्
   (ङ) स्वादिगण– सु, आप्
   (च) तुदादिगण–मुंच्, विश्, प्रच्छ्, विद् (लाभे)
   (छ) तनादिगण– कृ, तनु
   (ज) क्र्यादिगण–ग्रह्
   (झ) चुरादिगण– गण्, पाल्
4. अव्यय — 4
5. प्रत्यय — 5

(क) कृदन्त प्रत्यय– क्त, क्तवतु, तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, ण्यत्, ण्वुल्, ल्युट्, तृच्, णिनि।
(ख) तद्धित प्रत्यय–अण्, इनि, ठक्, इतच्, त्व, तल्, यत्, थाल्

6. कारकों तथा उपपद विभक्तियाँ 5
7. समास – अव्ययीभाव, कर्मधारय, बहुब्रीहि 5
8. रचना
   (क) हिन्दी तथा अंग्रेजी के अवतरणों का संस्कृत में अनुवाद। 5
   (ख) अपठित अनुच्छेदों पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर। 5
   (ग) चित्र पर आधारित संस्कृत में वाक्य रचना/संस्कृत में अनुच्छेद लेखन। 5
   (घ) अनौपचारिक पत्र। (लगभग 70 शब्दों में) 5

fVIi.kh

उपरि लिखित के लिए उदाहरण यथासंभव पाठ्यपुस्तक में आए प्रयोगों से लेना उपादेय होगा।

f'k{k.k fof/k ,oa rduhd

इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण को सुगम, सुग्राह्य तथा रोचक बनाने के लिए निर्दिष्ट बिन्दुओं को शिक्षण का आधार बनाया जाना चाहिए। शिक्षण करते हुए संस्कृत अध्यापक इस बात का ध्यान रखें कि उनका शिक्षण छात्रकेन्द्रित एवं क्रियापरक हों।

1. अध्यापकों को कक्षा में यथासंभव संस्कृतमय वातावरण बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए। एतदर्थ विद्यार्थियों के साथ दैनिक व्यवहार में आने वाले वाक्यों का संस्कृत में मौखिक अभ्यास करवाएं।
2. विद्यार्थियों से समय–समय पर संस्कृत में प्रश्न किए जायें तथा उन्हें संस्कृत में ही उत्तर देने के लिये प्रोत्साहित किया जाय।
3. अध्यापन प्रभावशाली बनाने तथा विद्यार्थियों की संस्कृत अध्ययन में रूचि बढ़ाने के लिए दृश्य एवं श्रव्य उपकरणों तथा संगणक (कम्प्यूटर) आदि का उपयोग किया जाय।
4. गद्य, पद्य, नाटक तथा कहानी आदि को सिखाने के लिए यथासंभव प्रत्यक्ष विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

d{kk&fØ;kdyki

विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा का प्रायोगिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने हेतु वर्ग–शिक्षण के अतिरिक्त निम्नांकित क्रिया–कलाप पर विशेष ध्यान देना उचित होगा–

- अध्यापक कक्षा में संस्कृत पाठों को पढ़कर विद्यार्थियों को सुनाएं तथा यथासंभव उनसे भी एक–एक करके तथा सामूहिक रूप से अनुवाचन कराएं।
- अध्यापक कक्षा में पद्य–पाठों को सस्वर पढ़कर विद्यार्थियों को सुनाएं तथा अनुवाचन कराएं।
- नाट्यांशों को पढ़ाते समय अध्यापक वाचिक अभिनय करें तथा विद्यार्थियों से भी वाचिक अभिनय करते हुए पाठ पढ़वाएं।
- अध्यापक कक्षा में संस्कृत कहानी सुनाएं तथा विद्यार्थियों को भी कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें।
- संस्कृत में वार्तालाप करते हुए विद्यार्थियों को संस्कृत में वार्तालाप करने की प्रेरणा प्रदान करें।

- विद्वानों के ध्वनि मुद्रित (रिकार्डेड) आदर्श पाठों को सुनाकर शुद्ध उच्चारण एवं उचित लय, यति के साथ श्लोक–पाठ का शिक्षण किया जाए। इसके अतिरिक्त सी.डी. रोम (C.D. Rom) का प्रयोग करते हुए अध्यापन को रुचिकर बनाने का प्रयास किया जाय।
- कक्षा में श्लोकपाठ एवं अन्त्याक्षरी कार्यक्रमों को भी कराया जा सकता है।

eY;kdu

पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप 80 प्रतिशत लिखित तथा 20 प्रतिशत मौखिक परीक्षा की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त समय–समय पर इकाई परीक्षा (यूनिट परीक्षा) द्वारा विद्यार्थियों की विषयगत त्रुटियों को संशोधित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

- विद्यालय के विभिन्न समारोहों के अवसर पर श्लोक–पाठ, संवाद तथा अन्य क्रिया–कलापों का मूल्यांकन किया जाए।
- विद्यालय में विभिन्न समारोहों के आयोजनों के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत में वार्तालाप, संवाद तथा नाट्य–प्रयोग करने का अवसर प्रदान कर उनका मूल्यांकन किया जाय।